इब्रानीयों 6:17–18 ; 1 शमु 15:29

7.<u>परमेश्वर बुध्दी से भरा है</u> :– परमेश्वर न केवल बुध्दीमान है परन्तु सब कुछ जानता है। वह हमें वही देता है जो वो ठीक समझता है। रोमियों 11:33 मे लिखा है "अहा! परमश्वेर का धन, और बुध्दी और ज्ञान क्या ही गंभीर है!"
भजनसहिता 104:24

8.<u>परमेश्वर सर्वसमर्थ है</u> :– ऐसा कुछ नही जो परमेश्वर न कर सके।
यिर्मयाह 32:17 में लिखा है "तू ने बडे सामर्थ और बढाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है।"

9.<u>परमेश्वर पवित्र और पूर्ण है</u> :– वह जो कुछ भी करता अच्छा और सही होता है।
1 पतरस 1:15–16 मे लिखा है " पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने चालचलन में पवित्र बनो

10.<u>परमेश्वर सत्य है</u> :– युहन्ना 3:33 मे लिखा है " जिस ने उसकी गवाही ग्रहण कर ली, उसने इस बात पर मुहर लगा दी कि परमेश्वर सच्चा है।" रोमियों 3:4 में लिखा है " परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे।" 1 यूहन्ना 5:6–7; यशयाह 65:16

11.<u>परमेश्वर वह है जो सब कुछ कर सकता है</u> :– सब बाते परमेश्वर की महान शक्ति के अधीन है, और वही सब के ऊपर विराजमान है। कुलुस्सियों 1:17ब मे लिखा है "सब वस्तु उसी मे स्थिर रहती है।"
यशयाह 45:5–7

12.<u>परमेश्वर त्रिएक है</u> :– अगले अध्याय में इसके बारे मे पढे

बाइबल पहेली

1.अदन उद्यान से निकली हुई चार धाराये ?

2.यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का भोजन क्या था ?

3.रूत कहा पर रहनेवाली थी ?

4.मरते वक्त यहोशू की उम्र क्या थी ?

5.जब जलप्रलय आया तब नुह कि आयु क्या थी ?

6.पृथ्वी का पहला वीर कौन ?

7.बाइबल मे जीन लोगोंको मरने का अनुभव नही आया वो दोन लोग कौन थे

8.अब्राहाम के कितने भाई थे ?

9.जीन लोगो का जन्म नही हुआ उनके नाम क्या थे

10.जीन लोंगो की मृत्यु नही हुई उनके नाम क्या थे।

.....उत्तर अगले अंक में

Rev.Vinay Dube
Founder & Senior Pastor

DISCIPLESHIP TRAINING CENTRE
Acts Foundation, Potter's House Church ,3rd Lane, Madhuban, Sangvi Pune- 27 Ph.9850833779 ;contact@actsministry.in

बाइबल सिद्धान्त / Bible Doctrine

अंक:4 *Course-2* *Aug 2009* मुल्य:10 रू.

भाग–1
परमेश्वर का वचन परमेश्वर के बारे मे क्या सिखाता है।

अध्याय 4

परमेश्वर मनुष्य के साथ क्या बाँटता है

परमेश्वर के बारे में कुछ बाते जो वह मनुष्य के साथ बाँटता है :–

पिछले अध्याय में हमने देखा उन बातों को जो परमेश्वर मनुष्य के साथ नही बाँटता। इस अध्याय में हम देखेंगे उन बातों को जो परमेश्वर मनुष्य के साथ बॉटना चाहता है। मनुष्य इन बातों को खुद नही पाता। जब वह एक मसीही बन जाता तब उसके अन्दर परमेश्वर के लिये जीने की इच्छा जागृत होती है। परमेश्वर उन बातों को उसके साथ बाँटता है।

1.<u>परमेश्वर पवित्र है</u> :– 'पवित्र' शब्द का अर्थ है 'सब पापों से मुक्त होना' या शुध्द होना। 1 पतरस 1:15 मे लिखा है "पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो।" परमेश्वर पवित्र है और यह मनुष्य के साथ बॉटना चाहता है। जब मनुष्य इस प्रकार परमेश्वर की तरह हो जाता है, इसका मतलब वह परमेश्वर के लिये उसके जैसा जीने के लिये ठहराया गया है।
युहन्ना 17:11ब मे लिखा है " हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उनकी रक्षा कर कि वे हमारे समान एक हों।" परमेश्वर अपने पवित्रता के बारे में 1 पतरस 1:16 में केहता है कि " पवित्र बनो, क्योंकि मै पवित्र हूं।" यहोशू 24:19, भजनसहिता 99:5,9
लूका 1:49 यशयाह 57:17
प्रकाशितवाक्य 4:8 यशयाह 6:3
प्रकाशितवाक्य 6:10 व्यवस्थाविवरण32:43;
भजनसहिता 79:10
प्रकाशितवाक्य 15:4
भजनसहिता 86:9; यिर्मयाह 10:7

2.<u>परमेश्वर सदा सही है और जो कुछ वो करता है, अच्छा है</u> :–
परमेश्वर ने मनुष्य को अपने मे सही रहने के लिये उसे रास्ता दिखाया है। परमेश्वर हर उस पापी मनुष्य को माफ और स्विकार करेगा जो प्रभु यीशु के नाम से उसके पास आता है।1 कुरिन्थियों 1:30 मे लिखा है "उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा" भजनसहिता 19:9; यिर्मयाह 23:5

3.<u>परमेश्वर सदा विश्वासयोग्य और सच्चा है</u> :– परमेश्वर पर हमेशा भरोसा किया जा सकता है। परमेश्वर अपने वादों के अनुसार विश्वासयोग्य है। 1 थिस्सलुनी 5:24 मे लिखा है" तुम्हारा

बुलानेवाला सच्चा परमेश्वर है" इब्रानी 10:23 मे लिखा है "क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है।" और वह अपने आप मे विश्वासयोग्य है। 2 तीमुथियुस 2:13 मे लिखा है " यदि हम अविश्वासी भी हों तो भी वह विश्वास योग्य बना रहता है।" व्यवस्थाविवरण 7:9; यशयाह 49:7

4.परमेश्वर कृपालु, सहनशील और धीरजरूपी है :– ये गुण उस मसीह के अन्दर भी दिखते हैं जो परमेश्वर को खुश करने की चाहत रखता है। रोमियों 2:14, रोमियों 11:22 मे लिखा है " इसलिए परमेश्वर की कृपा और कडाई को देख"भजनसहिता 89:24

5.परमेश्वर प्रेम है:–अधिकतर लोग परमेश्वर को 'प्रेम' समझते है। सच्चा प्रेम परमश्वर से ही है और एक मसीह के अन्दर प्रेम है क्योंकि परमेश्वर ने उसके अन्दर प्रेम डाला है। मसीही आराधना ऐसी आराधना है जो परमेश्वर के प्रेम को दिखाती है। लकडी, पत्थर और अन्य चीजो से बने भगवान जिन्हें मनुष्य संसार भर में पूजता है, वे नफरत से भरे हैं। यह लोग यह समझते हैं कि इन झुठे भगवानों को हर समय कुछ देते रहना चाहिये तभी ये उनको सजा नही देंगे। जो मनुष्य अपना भरोसा परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह पर रखता है, परमेश्वर उनसे प्रेम करता है।
व्यवस्था 7:7–8;यिर्मयाह 31:3; 1 कुरिन्थियो 5:14अ; 13:11ब ,1युहन्ना 4:8–16
युहन्ना 14:21,व्यवस्था 10:12; नीति 8:17, युहन्ना 16:27,युहन्ना 17:23,26

परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है जब की वह पापी है। युहन्ना 3:16 मे लिखा है" परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया की अपना एकलौता पुत्र दे दिया" रोमियों 5:8: "परन्तु परमेश्वर हम पर अपना प्रेम इस प्रकार प्रगट करता है कि जब पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरे।" परमेश्वर ने अपने पुत्र को देकर पाप की समस्या का समाधान किया।" यशयाह 53:5–6
रोमियों 1:7,भजनसहिता 91:14रोमियों 5:8,यशयाह 53:6,गलती 2:20,इफिस 2:4,नेहम्या 9:17ब ,इब्रानी 12:6 भजनसहिता 119:75; नीति 3:11–12
1 युहन्ना 3:1

यह सब बातें परमेश्वर मनुष्य के साथ बॉटता है। जो पाप की सजा से बच गए हैं, और जो परमेश्वर जैसा जीवन व्यतीत करना चाहते है।,

भाग – 1
परमेश्वर का वचन परमेश्वर के बारे मे क्या सिखाता है।

अध्याय 5
परमेश्वर कैसा है।

परमेश्वर कैसा है :– क्योंकि परमेश्वर वो है जो है, इसलिये शब्दों में उसके बारें में बताना मुश्किल है। परमेश्वर का वचन मनुष्य को बताता है कि परमेश्वर क्या है। बिना यह बताए कि परमेश्वर कैसा है और वह क्या करता है, यह बताना सम्भव नही की परमेश्वर कौन है।

1.परमेश्वर आत्मा है :– परमेश्वर का कोई शरीर नही है। वह कौन है और किस प्रकार काम करता है, इसके लिये उसे शरीर की आवश्यकता नही। युहन्ना 4:24 में लिखा है "परमेश्वर आत्मा है, और आवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाला आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करे।" व्यवस्थाविवरण 4:15; भजनसहिता 139:7

2.परमेश्वर ज्योति है :– यह हमें बताता है कि परमेश्वर क्या है और वह किस प्रकार कार्य करता है। संसार को बनाने के बाद परमेश्वर ने पहला काम 'ज्योति' को बनाने का किया। उत्पत्ती 1:3 में लिखा है "तब परमेश्वर ने कहा, प्रकाश हो: तो प्रकाश हो गया। 1 युहन्ना 1:5 मे लिखा है "परमेश्वर ज्योति है, और उसमे में कुछ भी अन्धकार नही। यशयाह 60:19

3.परमेश्वर प्रेम है :– परमेश्वर न केवल प्रेम से भरा है, वो 'प्रेम' है। वह मनुष्य के साथ इस प्रेम को बॉटने में खुश है। 1 युहन्ना 4:16 मे लिखा है "परमेश्वर प्रेम है। जो प्रेम मे बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उसमे बना रहता है।" परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है परन्तु पाप से नफरत करता है।
नीति 6:16–19 यशयाह 43:4 यिर्मयाह 31:3

4.परमेश्वर आग है जो हर प्रकार के पाप को नष्ट करता है :– परमेश्वर हर काम में सही है जो वो करता है वो पवित्र और पूर्ण है। सोना और चॉदी शुध्द किया जाता ताकी उसमे कोई और धातू न मिल जाए, जलती हुई आग का प्रयोग किया जाता जिससे सब अशुध्द चीजें भस्म हो जाती है। 'आग' स्वच्छ करता है। इब्रानियों 12:29 मे लिखा है " क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है।"
व्यवस्थाविवरण 4:24; 9:3,19

5.परमेश्वर एक व्यक्ति है :– तीन बाते जो व्यक्ति बनाती है 1) जानने की शक्ति 2) महसूस करने की शक्ति 3 चुनाव करने की शक्ति। परमेश्वर मे ये तीन बाते है और इसलिये वह 'व्यक्ति' है। उसका तो शरीर नही है क्योंकि वो आत्मा है। आत्माओं का कोई शरीर नही होता। हम यह जानते है की वह व्यक्ति है क्योंकी –

1.परमेश्वर के पास जानने की शक्ति है परमेश्वर अपने आप को जानता है। जब उसने मूसा को जलती हुई झाडी से पुकारा तब उसने कहा " मैं जो हूं सो हूं" इससे ज्यादा मजबुती से नही कहा जा सकता। परमेश्वर अपने बारे में निश्चय था। परमेश्वर सब कुछ जानता है। प्ररितों 15:18 मे लिखा है " यह वही प्रभु कहता है। जो सृष्टी की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है।"और इब्रानीयों 4:13 में लिखा है " सृष्टी की कोई वस्तु उस से छिपी नही है।"
2 इति 16:9 ; भजनसहिता 33:13–15

2.परमेश्वर मे महसूस करने की शक्ति है :– युहन्ना 3:16 इसे स्पष्ट दर्शाता है " परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उस ने अपना इकलौता पुत्र दे दिया क्योंकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" याकुब 5:11ब ; भजनसहिता 103:8

3.परमेश्वर मे चुनाव करने की शक्ति है भजनसहिता 115:3 मे लिखा है "हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है; उस ने जो चाहा वही किया है।" भजनसहिता 103:19

6.परमेश्वर बदलता नही है :– कोई भी बात उसे या उसके कार्य को बदल नही सकती। उसकी कोई शुरूआत नही है और वह हमेशा रहेगा। परमेश्वर हमेशा एकसा था और हमेशा रहेगा। याकुब 1:17अ में लिखा है " हर एक उत्तम दान स्वर्ग से है।